सन्तों की पुरातन साधना स्थली: नवागढ़

- प्रोफेसर डॉ. भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु'

संस्कृति के प्राणतज़्व तीर्थ संरक्षण को भारतीय संस्कृति का आधार स्तज़्भ मानकर इस वृज़ के ''सर्वतो भावेन सज़्यक् परिपालनार्थं'' अहर्निश दज़ावधान प्रतिष्ठारत्नाकर महान् मनीषी श्रद्धेय पं. गुलाबचन्द जी जैन 'पुष्प' टीकमगढ़ (म.प्र.) अब हमारे बीच सशरीर नहीं है, किन्तु एक महनीय जीवन्त कृति विद्यमान है -श्री दिगज़्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ (नन्दपुर) नावई, जिला ललितपुर (उ.प्र.) ।

प्रकृति के झञ्झावातों, प्राकृतिक और राजनैतिक प्रकोपों सांस्कृतिक परिवर्तनों आदि से घोर उपेक्षित अपरिचित इस स्थल की सबसे पहले सुध लेने वालों के अग्रगण्य हैं प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द जी 'पुष्प'। वस्तुतः यह स्थल सन्तों की पुरातन साधना स्थली है।

श्री दिगज़्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ जैनधर्म के 18वें तीर्थंकर भगवान् अरनाथ स्वामी के अतिशय सज़्पन्न होने के साथ सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यन्त महज़्वपूर्ण है। इसका इतिहास शास्त्रों, पुराणों एवं किंवदंतियों से परे है। इस क्षेत्र में उपलज़्ध शिलालेख एवं प्रशस्तियों में इसकी प्राचीनता जहाँ संवत् 1123 (सन् 1066 ई.) है, वहीं शिल्प एवं पुरासज़्पदा की कलाकृतियाँ इसके 3 री सदी से पूर्व की साक्षी हैं।

आदरणीय ब्रह्मचारी जयकुमार 'निशांत', जिनने स्वेच्छा से शासकीय सेवा से सेवानिवृज़ि लेकर आचार्य विद्यासागर जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत लिया, आपने पिता प्रतिष्ठा-पितामह पं. गुलाबचन्द जी 'पुष्प' की प्रतिष्ठा अनुष्ठान की धरोहर को सहेजकर 200 पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव सज़्पन्न कराने का गौरव प्राप्त किया है। आपने 900 वर्ष प्राचीन नवागढ़ क्षेत्र के संवर्धन का संकल्प लेकर इसकी मौलिकता एवं शिल्पकला को संरक्षित रखते हुए विकास कार्य सज़्पन्न कराया है।

आदरणीय ब्र. निशांत जी ने नवागढ़ के सरपंच श्री रामनारायण यादव के साथ अनेक माह दिन-दिनभर क्षेत्रीय बीहड़ एवं पर्वतों पर भ्रमण करके कई ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त किये हैं। आपने एक शैलाश्रय में अतिप्राचीन प्राग् ऐतिहासिक शैलचित्र खोजे हैं, इनमें से अधिकांश काल कवलित होकर केवल रंग के धज़्बे एवं लकीरें

मात्र शेष रह गये हैं, शेष बचे चित्र प्राकृतिक परिवेश, धार्मिक प्रभावना एवं साधना स्थलों का संकेत कर रहे हैं।

आदरणीय ब्र निशांत जी इतिहास की कड़ियों को जुटाने में स्थानीय वरिष्ठजनों, शिल्पविदों, इतिहासविदों को सतत इस क्षेत्र पर लाने का सज़्यक् पुरुषार्थ कर रहे हैं। इनमें पुराविद्या विशेषज्ञ पं. नीरज जी सतना, प्रसिद्ध प्रतिमाविज्ञानी, डॉ. कस्तूरचंद्र जी 'सुमन', प्रशस्तिवाचक,डॉ. ए.पी. गौड़, पुरातज़्व अधिकारी लखनऊ, डॉ. एस. के. दुबे संग्रहालय अधिकारी झांसी, डॉ. के. पी. त्रिपाठी एवं श्री हरिविष्णु अवस्थी, इतिहासविद् टीकमगढ़, डॉ. स्नेहरानी जैन शिल्पकला एवं शैलचित्र विशेषज्ञ, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, इंजीनियर एस. एम. जैन सोनीपत, वरिष्ठ वास्तुविद्, राजकुमार जी कोठारी, जयपुर, वास्तुविद् ने नवागढ़ क्षेत्र की पुरासज़्पदा को अतिविशिष्ट एवं महज़्वपूर्ण निरूपित कर इसके संरक्षण हेतु ''संग्रहालय'' की आवश्यकता पर जोर दिया है। तदनुसार क्षेत्रीय कमेटी ने तत्परता से 138 कलाशिल्पों का झांसी पुरातज़्व कार्यालय में पंजीकरण करा लिया है।

विज़्यात प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द जी 'पुष्प' नवागढ़ क्षेत्र के अन्वेषक, अध्यक्ष श्री हीरालाल जी डूंडा एवं कोषाध्यक्ष श्री दयाचन्द जी सर्राफमैनवार ने पूज्य स्व. क्षुल्लक चिदानंद जी के वर्ष 1965 एवं 1966 के चातुर्मास की स्मृति से बताया कि क्षुल्लक जी आहार करने के पश्चात् बीहड़ जंगलों में साधना करने जाते थे। कभी-कभी 2-3 दिन व्यतीत हो जाते थे, लोगों के खोजने पर भी वह नहीं मिलते थे। क्षुल्लक जी ने अपना अनुभव बताया कि यह क्षेत्र अत्यन्त रमणीक, शांत एवं आत्मसाधना के लिए विलक्षण ऊर्जायुक्त है। यहाँ की पहाड़ियों में न जाने कितने साधकों ने संल्लेखना धारणकर आत्म कल्याण किया है। यहाँ की ऊर्जा ध्यान के लिये स्वतः ही प्रेरित करती है। यहाँ की गुफाओं में साधना करते हुए समय का पता ही नहीं चलता, विशेष आत्मशांति प्राप्त होती है।

ग्राम के वरिष्ठ श्री हरगोविन्द जी यादव बताते हैं, इस पहाड़ी में कई गुफाएँ हैं, जिनमें से दो गुफाओं को गाँव के लोगों ने हिंसक जानवरों के भय से बंद कर दिया है, यह ध्यान साधना का प्रमुख स्थान था। यहाँ की पहाड़ियों में स्थित गुफाओं में कई जीवों ने सिद्धि प्राप्त की है, जिसने जो चाहा उसे मिला है, यह तो एक सिद्ध स्थान ही

है, यहाँ की चंदेलकालीन बावड़ियाँ, मन्दिर एवं मठ धरती में समा गये हैं। इनके शिलाखण्ड यत्र-तत्र आज भी बिखरे हैं तथा अधिकांश भूमि में दब गये हैं या दबा दिए गए हैं। यदि उनकी खोज की जाये तो निश्चित रूप से इस क्षेत्र के इतिहास एवं संस्कृति की विशेषता बताने वाली पुरा सज़्पदा उद्घाटित होगी। इनमें हिंसक पशुओं का आवास होने के कारण ग्रामवासियों ने बंद कर दिया है, इन्हें पुनः खोलने का कार्य होना है।

क्षेत्र से डेढ़ कि.मी. दूर पहाड़ी पर स्थित मटकी गुफा जो अत्यन्त विलक्षण है, विशाल शिला के मध्य एक मटकी के आकार का खाली स्थान हैं, जिसमें शिला के एक किनारे पर टूटे स्थान से सिर अन्दर डालकर प्रवेश करने पर कमर के ऊपर का हिस्सा अंदर चला जाता है। साधक आसन लगाकर इसमें घंटों साधना कर सकता है।

क्षेत्र से लगभग 3 कि.मी. दूर बीहड़ जंगल में विशाल शिलाखण्डों के मध्य दो चट्टानों के मध्य प्राकृतिक स्थल है, जहाँ 8-10 साधक आराम से विश्राम कर सकते हैं।

पहाड़ी के दूसरे छोर पर एक विशाल चट्टान में त्रिभुजाकार गुफा, जिसमें 3-4 साधक वर्षा, धूप एवं हवा से सामान्य अनुकूल मौसम में निर्विघ्न साधना कर सकते हैं।

यह विशेष शैलाश्रय है जो सबसे ऊपर दो-तीन शिलाओं के आश्रय से निर्मित है। इसमें ऊपर शिला जो छत के आकार की है, में प्रागैतिहासिक शैलचित्र अंकित किए गये हैं, जिनमें प्राकृतिक उत्कीर्ण शिल्प चित्रों के साथ रंगीन शैल चित्रांकन सांकेतिक भाषा में जैनदर्शन के सिद्धान्तों को दर्शाते हैं।

चंदेल बावड़ी : ईंटों द्वारा निर्मित 35-40 फुट गोलाकार में फैली प्राचीन बावड़ी है, जिसमें नीचे तक जाने के लिए पाषाण खण्डों की सुविधाजनक सीढ़ियाँ निर्मित हैं। वर्तमान में यह मिट्टी से भर गयी है जो जीर्णता के कारण ध्वस्त होने की कगार पर है। वर्तमान में नवागढ़ समिति द्वारा ब्र. निशांत भैया जी के निर्देशन में इसका जीर्णोद्धार हो चुका है।

रहस्मय मन्दिर के अवशेष : यह मंदिर विशेष शिलाखण्ड एवं आमलक के

शिलाखण्ड सहित विशाल लगभग 60 फीट ऊँचे तेंदू के वृक्षों के मध्य अपने गर्भ में न जाने कितने रहस्यों को समेटे है, खोज का विषय हैं। ग्रामीणजनों में इसकी विशेष श्रद्धा एवं बहुमान है।

पुरा विद्या विशेषज्ञ डॉ. स्नेहरानी, डॉ. भागेन्दु जैन, डॉ. ए.पी. गौड एवं डॉ. के. पी. त्रिपाठी के अनुसार यहाँ की खुदाई में प्राप्त विशाल खंडित जिनबिज़्ब एवं जैनशासक की प्रतिमा इस क्षेत्र के हजारों साल प्राचीन समृद्ध नगर होने की संभावना व्यक्त करते हैं। यह जैनों का विशेष सज़्पन्न क्षेत्र एवं साधना स्थल रहा होगा, जो काल के क्रूर थपेड़ों से कब भूमि में समा गया, अतीत के गर्भ में है। पहाड़ पर स्थित अलंकृत शिल्प के शीर्ष पर स्थित अर्हन्त प्रतिमा के कारण प्रतिमा विज्ञान इन्हें जैनशासक के रूप में वर्णित करता है, परन्तु ग्रामीणजनों की अगाध श्रद्धा इन्हें गाँव का संरक्षण करने वाले एवं दुःखों का निवारण करने वाले दूल्हादेव एवं बगाज माता के रूप में पूजती है।

डॉ. स्नेहरानी जी ने अपने अनुभव से शैलचित्रों की रचनाधर्मिता को हड़प्पा मोहन जोदड़ों से प्राचीन बताया है। इन शैलाश्रयों में शैलचित्रों के अलावा शिलालेखों की शृंखला, पाषाण औजार एवं अन्य शिल्प भी मिलना चाहिए, ज़्योंकि शैलचित्रों की आकृति इस क्षेत्र को निर्वाण क्षेत्र होने का संकेत कर रही है। यह शैलचित्र भीमबैठका के शैलचित्रों से भिन्न है। भीमबैठका के शैलचित्रों में उदरपूर्ति के लिए आखेट (शिकार) को प्रदर्शित किया गया है, जबकि नवागढ़ के शैलचित्रों में प्राकृतिक समृद्धि एवं धार्मिकता को प्रदर्शित किया गया है। इन चित्रों को अलग-अलग काल में अलग-अलग रंगों एवं शिला को उकेरित करके बनाया गया है। इससे प्रतीत होता है कि यहाँ कई पीढ़ियों ने साधना करके इस क्षेत्र को जीवंतता प्रदान की है।

आपके अनुसार नवागढ़ के शैलचित्र वृषभ, अहिंसक जीवन शैली, प्राकृतिक समृद्धि, कृषि, धार्मिक जीवन पद्धति का प्रतीक हैं। वृषभ के सामने चौकोर रचना की लकीरें धर्म के प्रभाव को चारों दिशाओं एवं विदिशाओं में प्रसारित होने का प्रतीक है। तरंगे, सरोवर एवं विशाल जलाशयों का, गोल रचना विशाल कूपों एवं बावड़ियों का, अन्य रचना में पर्वत शृंखला की चोटी इस क्षेत्र की सुरज़्य रमणीक साधना

स्थली को इंगित करती हैं। अन्य शैलचित्र में गृहाकृति साधना वसतिका जहाँ संल्लेखना धारणकर समाधिमरण की प्रक्रिया सज़्पन्न की जाती है, को चित्रित किया है, उसी के ऊपर केवल ज्ञान सूर्य रूप चकरी प्रकाशमान है।

हल्केरंग के शैलचित्र यहाँ साधकों के महाव्रतों अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह को धारण करने वाले महामनीषियों की तप साधना के विशेष आयाम अर्थात् सज़्यग्दर्शन, सज़्यग्ज्ञान, सज़्यज़्चारित्र, सज़्यक् तप रूप आराधनाओं को दर्शा रहे हैं।

एक अन्य अतिविशिष्ट रचना संतों की सल्लेखना चर्या की ओर संकेत कर रही है, जिसमें साधक रत्नत्रय अर्थात् सज़्यग्दर्शन, ज्ञान एवं चारित्र को धारणकर तपः शक्ति से कषायों को कृष करके आत्मसाधना का संकेत है।

डॉ. स्नेहरानी जी ने अपने दीर्घ अनुभव एवं तीक्ष्ण दृष्टि में यहाँ के शैलाश्रय में सफेद आधार पर गेरु वर्ण से निर्मित चित्रों के साथ शिला पर कुरेदकर उकेरे गये, बूज़्ब स्केच, लोकपूरणी सैंधव चकरी, केवली समुद्घात को केवलदर्शन रूप नेत्र सज़्पूर्ण ज्ञान अर्थात् केवलज्ञान को सप्त पंखुड़ी पुष्प से जैनदर्शन के प्रमुख आधार सप्त परम स्थान यथा सज्जाति, सद् गृहस्थ, पारिव्राज्य, सुरेन्द पद, चक्रवर्ती, पंचपरमेष्ठी एवं निर्वाण को दर्शाता है।

गाढ़े रंग की आकृति सैंधव काल के चित्रों से मिलान करने पर संसारी जीव को संल्लेखना साधना द्वारा संसार से निकालकर पंचम सिद्धगति में आत्मा के ऊर्ध्वगमन का प्रतीक है।

इस लघुकाय शैलाश्रय के शैलचित्रों की चित्र संयोजना साधना के विशेष रूपों को स्पष्ट कर रही है, ज़्योंकि बांई ओर से दांयी ओर ' क्रमशः साधना के वृद्धिगंत आयामों को दर्शाया गया है, यहाँ साधक में संल्लेखना धारण करके आत्म शक्ति का विकास करते हुए, पंच महाव्रतों को धारण करके चारों आराधनाओं से कषाय कृश् करके अहिंसक धर्म की चतुर्दिक् प्रभावना करके सप्तपरम स्थान के श्रेष्ठपद मोक्ष अर्थात् निर्वाण को प्राप्त करता है।

आदरणीय ब्र. जयकुमार 'निशांत' द्वारा खोजे गये शैलाश्रय प्रागैतिहासिक शैलचित्र-जैनधर्म की प्राचीनता, जैन जीवन पद्धति, साधना एवं मृत्यु महोत्सव की

पुरातन परज़्परा के साथ नवागढ़ की समृद्धिशाली जैन संस्कृति के संस्थापक जैन शासक की प्रतिमा इसे विशेष साधना स्थली निर्वाण भूमि के रहस्यों को उद्घाटित करने वाले हैं।

वस्तुतः आदरणीय ब्र. 'निशान्त' जी का सतत जागरूक पुरुषार्थ नवागढ़ क्षेत्र को भारतीय संस्कृति, कलाशिल्प एवं पर्यटन का विशेष रूप प्रदान करेगा, जिससे सज़्पूर्ण विश्व इस क्षेत्र पर आकर रहस्यमय सूत्रों को उद्घाटित कर आत्मशांति प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकेगा।

इस परिक्षेत्र के शैलचित्रों एवं शैलाश्रयों की प्राचीनता और कलावशेषों का सज़्यक् अध्ययन इस क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास को किस शताज़्दी तक ले जाता है ? प्रतीक्षित है। शासन एवं प्रशासन का ध्यान इन शैलाश्रयों तथा शैल चित्रों के संरक्षण और कला प्रेमियों मर्मज्ञों-मनीषियों का ध्यान इनके अध्ययन-अनुशीलन की ओर प्रार्थित है। कहीं ऐसा न हो कि यहाँ के शैल-चित्र भी अतीत की स्मृतियों को समेटे काल के क्रूर थपेड़ों में विलीन हो जायें या आधुनिक संसाधनों के द्वारा भवन, सेतु, मार्ग आदि के निर्माण हेतु बोल्डर-गिट्टी बनकर हमेशा के लिए विनष्ट हो जाएँ।

प्रकृति की गोद में समाये, इतिहास, संस्कृति, कला और पुराविद्याओं के महज़्वपूर्ण इस विस्मृत अध्याय को प्राण-पण से पुनरुज्जीवित करने वाले उन महामनीषी (स्व.) प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द्रजी 'पुष्प' को कोटि-कोटि नमन और उनके दायाद को न केवल सुरक्षित प्रत्युत कोटि-गुणित अधिक संवर्द्धित कर विश्व स्तर पर सुप्रतिष्ठित करने वाले नवागढ़ क्षेत्र के सभी कार्यकर्ताओं को सज़्यक् पुरुषार्थ एवं आदरणीय बाल ब्रह्मचारी प्रतिष्ठाचार्य जय 'निशान्त' जी का सतत जागृत सार्थक समर्पण शतशः अभिनन्दनीय है। उनकी लक्ष्य भेदी साधना श्रमण संस्कृति के गौरवपूर्ण अतीत के साथ मध्यकालीन साधना के अनुद्घाटित अध्यायों को सज़्पुष्ट करके 'चेदि जनपद' के सज़्पूर्ण परिक्षेत्र की समृद्धि को रूपायित कर सकेगी, ऐसी आशा है।

- निदेशक, संस्कृत, प्राकृत तथा जैन विद्या अनुसन्धान केन्द्र, दमोह (म.प्र.)